आपातकाल में सृजन फुलवारी

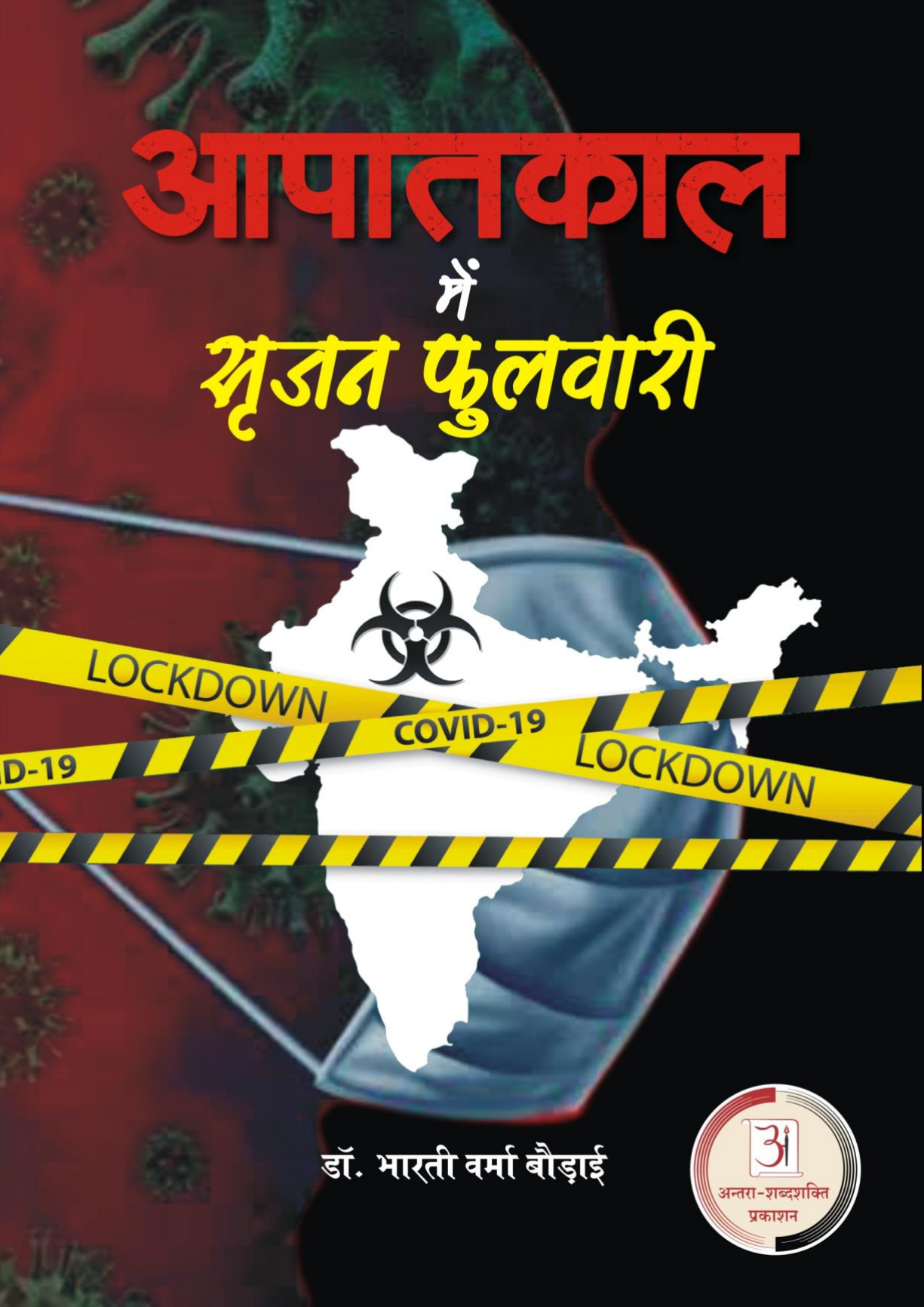

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-125-1

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY DR BHARTI VERMA BAURAI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेंगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	चिरैया पूछ रही हमसे	6
2.	बचपन	7
3.	कर्फ्यू	8
4.	कविता	9
5.	प्रकाश पुंज	10
6.	पीड़ा	11
7.	सुख	12
8.	मन बंजारा	13
9.	गुमनाम	14
10.	सफलता	15
11.	नया पाठ	16
12.	शहरों में पसरा सन्नाटा	17
13.	पत्र पेटी	18
14.	तुम्हारा सच हमें दिखने लगा है	19
15.	अनदेखा	20
16.	असीम	21

चिरैया पूछ रही हमसे

टालम टोली मिलकर
देखो करते सारे
एक-दूजे सिर फोड़
ठीकरा बने बेचारे
न्याय मिलेगा कभी यहाँ
अब पूछें किससे
चिरैया पूछ रही हमसे

कौन है राजा कौन दरोग़ा
पता नहीं चलता
अपना-अपना राग अलापें
सदा यही खलता
कैसे तोड़ें इस घेरे को अब
पूछ रही तुमसे
चिरैया पूछ रही हमसे

लगे शिकारी अब तो सब
कोई अपना न दिखे
रात अंधेरी नींद भी कहाँ
कोई सपना न दिखे
स्वयं कृष्ण बन चक्र चलाना
होगा साहस से
चिरैया कह रही हमसे

बचपन

आता है याद बहुत वो बीता हुआ बचपन!
रह-रह कर बुलाता है बीता हुआ बचपन!

जाने होंगी कहाँ वो मोहल्ले की सखियाँ
संग होती थी जिनसे वो अंतहीन बतियाँ,
गुड्डे की बारात तो होती गुड़िया की शादी
कभी वो बाराती तो कभी बनते हम घराती।

झंडे के मेले से लाते थे छोटे-छोटे बर्तन
उनमें पकती थी आलू-प्याज की सब्जी,
घराती बनाते थे कच्ची-पक्की रोटियाँ
खाते थे बाराती, बाद में मीठी गोलियाँ।

होती बारिश तो भीगते आँगन में जी भर
फटते कागज कॉपियों से छुपते-छुपा कर,
तब चलती नावें नालियों के बहते पानी में
जब डूब जाती तो जाकर फिर से बनाते।

कभी पेड़ों पर चढ़ना कभी छाया में बैठना
कभी घर से चुरा कर लाये लड्डू भी खाना,
बातों ही बातों में हो जाता संगीन झगड़ा
किसी घर के फल तोड़,देते दूजे को पकड़ा।

खट्टी-मीठी यादों से भरा हुआ था बचपन!
रह-रह कर बुलाता है बीता हुआ बचपन!

कर्फ्यू

पहले भी
लगा कर्फ्यू कई बार
पर इस बार का
कुछ अलग था,
जनता कर्फ्यू में
अपनी समझ/संयम से
अपने/अपनों के लिए
घर में रहना था,
मुखिया का आदेश
अपना सा लगा
घर में रहना
जरूरी सा लगा,
लोगों ने जाना
जनता द्वारा
स्वयं इस कर्फ्यू का
पालन करना चाहें तो
इतना कठिन नहीं है।

कविता

कभी भी
कहीं भी
मौके/बेमौके
आ धमकती है
जब तक न देखो
इसकी ओर
काटती रहती है चिकोटी,
करने नहीं देती
अतिथियों से बात भी,
बनाने नहीं देती खाना
न धोने देती कपड़े
न करने देती पूजा
न देखने देती स्वप्न
जागी/सोयी आँखों में,
जब तक लिखवा नहीं लेती
अपने को किसी बच्चे सी
जीना मुहाल कर देती है,
उतर कर कागज पर
नवजात सी
मीठी नींद में खो जाती है।

प्रकाश पुंज

दिव्य प्रकाश का द्वार खुला, आज बड़े सौभाग्य से!

कर प्रवेश इसमें होम दें
अपने अवगुण सारे
ज्यों गंगा-स्नान कर होते
सारे वारे न्यारे
भूले से भी अनिष्ट न होवे
कभी किसी के हाथ से।

टूटी आशाएँ उधड़े रिश्ते
जोड़े कौन करे तुरपाई
इनका कैसे साथ निभाना
नहीं किसी को समझ आई
चलो सभी मिल सोचे
फिरें न अपनी बात से।

समा जायें इस प्रकाश पुंज में
और पावन होकर निकलें
मनोमस्तिष्क में नया हो सभी
भूलें सब अगले-पिछले
नव आशा ले नव कदम बढ़ें
हो छुट्टी घात-प्रतिघात से।

दिव्य प्रकाश का द्वार खुला, आज बड़े सौभाग्य से!

पीड़ा

किस ठौर बाँधूँ नाव अपनी
सोच रही पीड़ा!

किस गली किस द्वार जाऊँ
कुछ देर जो बैठ सकूँ,
किस घर किस आँगन जाऊँ
किसी से जो बतिया सकूँ,

बोझ भारी लिए मन पर
डोल रही पीड़ा!

संगी साथी छूट गये सब
रहा न कोई अपना,
जिन हृदय में था बसेरा टूटे
बचा न कोई सपना,

साथ लिए निज कंडी झोरा
तोल रही पीड़ा!

बियाबान में एकाकी मन
ईश नाम ही जापे,
गरजे बदरी चमके बिजुरी
तन थर-थर काँपे,

बरसे पानी छम-छम धम-धम
भीग रही पीड़ा!

सुख

सुख की परिभाषा
सबकी अलग-अलग है,
कोई किसी के
सुख में सुखी होता है
कोई किसी को
दुखी देख सुखी होता है,
कोई सुख देकर
सुख पाता है
तो कोई दुख देकर
सुख पाता है,
सुख पाने/देने के
उतने ही बेहिसाब तरीके
जितने लगे होते हैं
पेड़ों पर बेहिसाब पत्ते,
कभी अकारण
किसी को खुशी देकर देखना
उसका सुख अनमोल होगा
कभी सोचा...?
नहीं, तो सोच कर देखना।

मन बंजारा

घूमे क्यों हर बस्ती जंगल
पूछे मन बंजारा!

अपने बचाव को घर में रहना
लोग मना रहे आनंद बाहर,
समझ पर इनकी पड़े है ओले
बुद्धि घास चरने गयी बाहर,

माने क्यों मरना हैं जिनको
देखे मन बंजारा!

स्वस्थ शरीर का स्वामी होना
कहाँ सबसे हो पाता है,
पर प्रयास से स्वस्थ रह सको
कह रहा सबसे विधाता

लो मनुज चला विधाता बनने
दुखिया मन बंजारा!

कोप-प्रकोप कब टूट पड़ेगा
कोई न जान सका,
आधि-व्याधि कब कसें शिकंजा
कोई न मान सका,

तब भी चैन की बजे बाँसुरी
सोच में मन बंजारा!

गुमनाम

नींव के पत्थर
गुमनाम रह जाते हैं,
जो जानते हैं उनकी कहानियाँ
वे भी उनके त्याग की
कहानियाँ कहते/सुनाते
काल कवलित हो जाते हैं,
दबी रह जाती हैं
नींव बने लोगों की
गुमनाम कहानियाँ
इतिहास में....!
लीक से हट कर
कुछ नया करने वाली
सिरफिरी युवा पीढ़ी ने
उठाया है बीड़ा
इतिहास को कुरेद कर
उन गुमनामों को
नाम देने का
हम सबके लिए.....!!

सफलता

नहीं होता
कोई शॉर्टकट सफलता का,
करनी होती है
दिन-रात लंबी-लंबी
यात्रा मीलों तक,
छोड़ना पड़ता है
सुख/चैन दिन का
और नींद रातों की,
तपना पड़ता है श्रमाग्नि में
सोने सा निखरने के लिए,
तब कहीं जाकर
मिलती है सफलता
और कभी नहीं भी हाथ यह,
न मिले तो करें मंथन
अपनी कार्य शैली का,
मिले तो
बनें स्थितप्रज्ञ,
ताकि बोले न सिर चढ़ कर
यह कभी,
पता है न,
सफलता के शिखर से
उतरना भी पड़ता है।

नया पाठ

इतना सुंदर जीवन
ईश्वर प्रदत्त अनमोल उपहार!
जिसमें हुआ समावेश
अपनों/परायों
परिचित/अपरिचितों
सूर्य से प्रकाशित गुरुओं
चाँदनी सी शीतल सखियों का,
जो बने प्रकाश स्तंभ
जीवन के गहन तम में
जब मार्ग दिखता नहीं था,
जीवन की
इस पाठशाला में
जब-जब जो आया
ठंडी हवा का एक झोंका लाया
कुछ देर संग बैठा
हँसा-बोला/गुनगुनाया
बातों-बातों में
नित नया एक पाठ पढ़ाया,
जीवन में
अब भी सबका
आना/मिलना जारी है
उनसे नित एक नया पाठ
पढ़ने की मेरी पूरी तैयारी है।

शहरों में पसरा सन्नाटा

कुछ बोलता है
पसरा हुआ सन्नाटा
कौन कितना घर में है
यह तोलता है,
बोलता शहर चुप है आजकल
शहरों में रहने वाले
सन्नाटा तोड़ तब-तब निकलते हैं
जान की परवाह न कर
नियम तोड़ खिलते हैं,
महामारी की
भयावहता से अनभिज्ञ
शिक्षित/अशिक्षित भी
नासमझी कर भीड़ बनते हैं,
बहकावे के शिकार हुए
चल पड़े जो कामगार ये
जीवन बचाने की जद्दोजहद में
कहीं मृत्यु का शिकार न हो जायें,
इसी से नाराज शहर सख्ती से
स्वयं न खिलवाड़ न करने की बात कह
फिर से सन्नाटा ओढ़ लेता है।

पत्र पेटी!

लाल पत्र पेटी!
अब इतिहास हो गयी
जुड़ी हैं इससे
बहुत सारी स्मृतियाँ
मेरे लेखक पापा!
लिखते थे बहुत सारे पत्र,

घर से थोड़ी दूर लगी
पत्र पेटी में लगभग रोज ही
जाते पत्र डालने,
कभी हो लेती मैं भी साथ में,
अंदर हाथ डाल
पत्रों को हिला कर
आश्वस्त हो डालती
अटका नहीं कहीं,
आयेगा डाकिया तो
सुरक्षित चले जायेंगे हमारे पत्र,

अब तो लाल पत्र पेटी कहीं दिखती नहीं,
इसी से लग कर साथ इसके
मैंने खिंचवायी है फोटो,
भले ही बन रही है इतिहास
फोटो में है साथ मेरे, यह लाल पत्र पेटी!

तुम्हारा सच हमें दिखने लगा है

ओढ़े रहो आवरण चाहे जितने
तुम्हारा सच हमें दिखने लगा है

बोलो कितना भी मीठा प्यार से
उसमें छिपा विष निकलने लगा है

हो गया है कठिन करना शिकार
शिकारी भी अब समझने लगा है

घड़ा पाप का फूटेगा ही कभी तो
पापी भी रास्ता अब बदलने लगा है

परदों से आखिर निकल ही गये
अंधेरों से सूरज निकलने लगा है

मेरा हाल जब आकर पूछा उन्होंने
भाग्य भी अब देखो सँवरने लगा है

मिल गये वो अचानक किसी मोड़ पर
देख मौसम भी करवट बदलने लगा है

अब के मिले जाने फिर कब मिलेंगे
यही सोच कर मन सिहरने लगा है।

अनदेखा

जो रहता सदा हृदय में
हर पल अनुभव
होता है उसका
अपना सब अच्छा-बुरा
कह कर उसे होते आश्वस्त,
जो करता है चिंता हर समय
वो अनदेखा ईश्वर
जो सबकी सुनता है
उसकी कौन सुनेगा कभी सोचा?
अपनी संतानों के
कर्मों के परिणाम देख
कितना बेचैन है वह
पर कुछ कह नहीं पाता,

कभी अपने अनदेखे ईश्वर से
खुल कर संवाद करें,
जैसा मनोरम संसार मिला
उसे वैसा बनाने को कुछ श्रम करें,
हम बदलेंगे स्वयं को
यह संकल्प कर आश्वस्त करें तो
प्रकृति की रंगत बदल जायेगी
ईश्वर के माथे की चिंता की लकीरें मिट,
उसके अधरों पर खोयी हँसी ले आयेगी।

असीम

ओ मातृभूमि!
तू असीम है, तू अथाह है
तेरी थाह पाने को
हर हद से गुजरना चाहती हूँ...!

तू आस है
मेरा विश्वास है
तुझे अर्पित करने
अपने प्राण देना चाहती हूँ....!!

तू निष्ठा है
मेरी श्रद्धा है
तुझमें एकरूप होने
तेरी मिट्टी में मिलना चाहती हूँ....!!!

तू माँ है
तुझमें भरा वात्सल्य है
तुझे फिर से पाने को
यहाँ बार-बार मैं जन्म लेना चाहती हूँ....!!!!

तू मेरा अभिमान है
तू मेरा स्वाभिमान हैं
वीर प्रसूता वसुंधरा, माटी तेरी चंदन
उससे अपने माथे पर तिलक करना चाहती हूँ...!!!!!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

Email- bharati.bourai007@gmail.com

Mobile- 9759252537

इस दुनिया में सारे काम हो जाते हैं बस स्वयं से ही मिलना नहीं हो पता, तब स्वयं से संवाद हो पाना तो बहुत ही दूर की बात है। उलझे रहते हैं दुनियादारी में, गृहस्थी को सहेजने-संजोने में, अपने लिए समय को भी चोरों की तरह चुराना पड़ता है। मन में कुछ उमड़ रहा, मथ रहा है...पर कागज तो दूर मोबाइल उठा तक पाना टेढ़ी खीर हो जाती है। प्रकृति ने अपना प्रकोप दिखाया तो सुरक्षित रहने हेतु जनता कर्फ्यू और लॉकडाउन ने कुछ परेशानियाँ तो दीं पर अपने परिवार के साथ मिलने का अवसर भरपूर दे रहा है। घर को अपनी तो सुनाते, पर उसकी कभी न सुनी, कई योजनाएँ, कई सपने, कई शौक और उससे बढ़ कर अपने से अपना ही साक्षात्कार, अपने से संवाद, घर की बोलती दीवारों, खिड़कियों, दरवाजों की सुनना, अपने छूटे सृजन को शब्द... कितना कुछ पा रही हूँ, सहेज रही हूँ, समर्पित सैनिक बन लक्ष्मण रेखा में रह कर देश को इस युद्ध लड़ने में अपना सहयोग दे रही हूँ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-125-1

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/